कुल पृष्ठ संख्या-32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या..............................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) [| | | | | |]

(In Words) ....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम — हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय .... राजनीति विज्ञान

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक [| | | |]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. कीमचोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 163 / 2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-अ

1. अरस्तू के वितरणात्मक न्याय का तात्पर्य - समाज में शक्ति, प्रतिष्ठा, धन-संपदा का वितरण अंकगणितीय नहीं बल्कि रेखागणितीय अनुपात में होना चाहिए अर्थात् व्यक्ति को शक्ति व सत्ता उसकी योग्यता के अनुसार मिलनी चाहिए।

2. हेनरी फेयोल ने सत्ता की यह परिभाषा दी -

"सत्ता आदेश देने का अधिकार व आदेश का पालन करवाने की शक्ति है।"

3. "राज्य संबंधी दृष्टिकोण के आधार पर ~~पश्चात~~ परम्परागत उदारवाद - पूँजीवादी राज्य व आधुनिक उदारवाद - लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर बल देता है। परंपरागत - राज्य आवश्यक बुराई / आधुनिक - राज्य हितकारी है।

4. समाजवाद के अनुसार पूँजीपति व मजदूर वर्ग के पारस्परिक संबंध - पारस्परिक निर्भरता के अनुसार है मार्क्सवाद के अनुसार पूँजीपति व मजदूर वर्ग के पारस्परिक संबंध - शोषक व शोषित वर्ग के अनुसार है। अर्थात पूंजीपति श्रमिकों का शोषण करते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	5.	44 वें संवैधानिक संशोधन, 1979 के द्वारा – सम्पत्ति के अधिकार को मौलिक अधिकारों की सूची से हटा दिया गया। [वर्तमान में अनु.-300(क) में यह एक कानूनी अधिकार है]
	6.	भारतीय संविधान समानता के अधिकार के अंतर्गत अनुच्छेद –17 में अस्पृश्यता का निषेध किया गया है
	7.	वर्तमान में लोकसभा में आरक्षित सीटें – अनुसूचित जाति के लिए – 84, अनुसूचित जनजाति के लिए – 47
	8.	सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को निम्न दशाओं में पद से हटाया जा सकता है – 1. कदाचार साबित होने पर 2. किसी भी अयोग्यता के आधार पर [न्यायाधीशों पर महाभियोग की प्रक्रिया अत्यधिक जटिल है]
	9.	गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक –

Pathshala

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. जवाहरलाल नेहरू [भारत]
2. जोसेफ ब्राज टीटो (यूगोस्लाविया)
3. गमाल अब्दुल नासिर (मिस्त्र)
4. सुकर्णो (इंडोनेशिया)

10. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का मुख्यालय – शांतिभवन (द हेग – नीदरलैण्ड) में है।

खण्ड – ब

11. कानूनी न्याय :- कानूनी न्याय का तात्पर्य है कानून अर्थात् विधि की दृष्टि से समानता। किसी भी व्यक्ति के साथ लिंग, धर्म, जाति आदि के आधार पर कोई भेद-भाव न करने का प्रावधान ही कानूनी न्याय है।
→ भारतीय राजनीतिक चिंतन में कानूनी न्याय को बहुत पहले ही मान्य था।

12. शक्ति एवं प्रभाव में अंतर –

शक्ति	प्रभाव
(1) शक्ति किसी के द्वारा जबरदस्ती कार्य कराने का अधिकार है।	(1) प्रभाव के कारण कोई भी व्यक्ति किसी कार्य को स्वेच्छा से करता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

[2] शक्ति दमनात्मक होती है।	[2] प्रभाव मनोवैज्ञानिक होता है।

13 'समाजवाद जनतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास करता है।'

→

उपर्युक्त कथन सर्वथा उचित है क्योंकि -

[1] समाजवाद जनतंत्र की भाँति समतामूलक समाज की स्थापना चाहता है।

[2] समाजवाद में भी जनतंत्र की भाँति नागरिकों की भागीदारी को सुनिश्चित करने पर बल दिया जाता है।

14. मार्क्स के अनुसार 'अतिरिक्त मूल्य' के समाज पर निम्न प्रभाव है।

→ ① श्रमिक वर्ग के अधिकारों का हनन

→ ② श्रमिकों के हितों की उपेक्षा

15 राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांतों के महत्व —

[1] लोककल्याण कारी राज्य की स्थापना में सहायक —

ये राज्य को जनता के हितों के संबंध में विचारने पर बल देते हैं।

Previous Pathshala

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

[2] शासन के लिए आचार-संहिता :- ये राज्य के नैतिक बन्धन हैं जो उसके लिए नीतियों की एक आचार-संहिता प्रस्तुत करते हैं।

16. 'संवैधानिक उपचारों का अधिकार' सर्वाधिक महत्वपूर्ण अधिकार है क्योंकि -

[1] यह व्यक्ति के अन्य अधिकारों की सुरक्षा हेतु न्यायिक प्रावधान करता है।

[2] इस अधिकार के तहत सर्वोच्च न्यायालय (अनु.-32) व उच्च न्यायालय (अनु.-226) मौलिक अधिकारों को बहाल करने के रिट जारी कर सकते हैं।

* इस प्रकार यह अन्य मौलिक अधिकारों का संरक्षक है।

17. सांप्रदायिकता के निम्न परिणाम हो सकते हैं :-

① राज्य का विखंडन

→ सांप्रदायिकता के कारण धार्मिक आधार पर राज्य विखंडित हो सकता है।
उदा.- भारत का विभाजन

② हिंसात्मक कार्य

→ सांप्रदायिक हिंसा के कारण हजारों लोगों की मृत्यु हो जाती है
उदा.- पाकिस्तान में सैनिक स्कूल पर हमला।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. 8 नवम्बर, 2016 को पाँच सौ व हजार रूपये के नोटों का वि मु द्रीकरण करने के निम्न उद्देश्य थे-

→ भ्रष्टाचार पर कुठाराघात करना।

→ काले धन को बाहर लाना

→ आतंकवादी गतिविधियों को कम करना

→ नकली नोटो के कारण हो रही कालाबाजारी पर वज्रपात।

खण्ड-स

19. स्वतंत्रता व समानता में पारस्परिक संबंधों को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं-

[1] लार्ड एक्टन का मत है कि- समानता के आवेश ने स्वतंत्रता की आशा को व्यर्थ कर दिया है।

→ स्वतंत्रता व समानता से संबंधित दो विचार सामने आते हैं-

(A) पहला विचार दोनों को परस्पर विरोधी मानता है।

(B) दूसरा विचार दोनों को एक दूसरे का पूरक बताते हैं।

Previous Pathshala

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(A) पहली विचारधारा के समर्थकों का कहना है कि –

(i) प्रकृति ने ही मनुष्य को समानता प्रदान नहीं की तो सभी समान कैसे हो सकते है।

(ii) समाज में व्यक्तियों को स्वतंत्रता तो दी जा सकती है परंतु उन्हें समान नहीं बनाया जा सकता।

(B) इन्हें पूरक मानने वाले विचारक कहते हैं –

① रूसो कहता है कि – "समानता के बिना स्वतंत्रता जीवित नहीं रह सकती"

② पोलार्ड लिखते है – "स्वतंत्रता की समस्या का एक मात्र समाधान समानता में निहित है।"

अतः संक्षेप में – हरबर्ट डीन का मत है – "स्वतंत्रता व समानता में परस्पर कोई द्वन्द नहीं है वरन ये एक ही आदर्श के दो तथ्य है।

---

20. राजनीतिक समाजीकरण के साधन :-

(अ) राजनीतिक दल →
राजनीतिक दल राजनीतिक समाजीकरण का एक प्रमुख साधन है। इसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

① राजनीतिक दल अपने प्रचार-प्रसार में जनता को भागीदार बनाकर उन्हें राजनीति

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

के प्रति सक्रिय बनाते हैं।

(ii) राजनीतिक दलों से प्रभावित होकर नागरिक मतदान में रुचि लेते हैं तथा राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझते हैं।

(iii) राजनीतिक दलों के द्वारा अधिकाधिक वोट बैंक बनाने की क्रिया में बहुत से लोग राजनीतिक संस्कृति की शिक्षा लेते हैं।

(ब) जनसंचार के साधन –

जनसंसार के साधन जैसे – टी.वी., रेडियो, समाचार-पत्र आदि निम्न प्रकार से राजनीतिक समाजीकरण में सहायक है –

(i) जनता में रुचि जगाकर – ये श्रव्य व दृश्य-श्रव्य माध्यम अपनी प्रभावशाली मीडिया कवरेज से जनता को राजनीति के प्रति जागरूक करते हैं।

(ii) सभी वर्गों तक पहुँच – जनसंचार के साधन सामान्यतया सभी वर्गों तक विस्तृत होते हैं जो जनता को राजनीति के प्रति सक्रिय बनाते हैं।

(iii) विभिन्न कार्यक्रम जैसे – चुनाव बुलेटिन

---

21 गाँधीवाद के समर्थक के रूप में हम सरकारी नीतियों के विरोध हेतु निम्न गति विधियां अपनाना पसन्द करेंगे –

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. असहयोग व उसके रूप
   (a) हड़ताल
   (b) सामजिक बहिष्कार
   (c) धरना-प्रदर्शन
2. प्रव्रजन या हिजरत
3. सविनय अवज्ञा
4. सामूहिक आंदोलन व उपवास

1 असहयोग व उसके रूप

(a) हड़ताल :- हड़ताल का अर्थ शांतिपूर्ण जन आंदोलन से है जोकि किसी स्थान पर जमा होकर सरकार की नीतियों का विरोध किया जाता है। उदा.- सुंदरलाल बहुगुणा का आमरण अनशन

(b) सामाजिक बहिष्कार :- सामाजिक बहिष्कार का तात्पर्य किसी भी असमाजिक तत्व को समाज से बेदखल करने से है।

(c) धरना-प्रदर्शन :- इसका तात्पर्य पूर्णतया अहिंसक जन आंदोलन से है जिसमें किसी धमकी आदि का प्रयोग न हो।

2 प्रव्रजन या हिजरत :- इसका तात्पर्य आत्म सम्मान की रक्षा हेतु अपने निवास स्थान को त्यागने से है। उदा.- 1928 में बारदोली में।

3 सविनय अवज्ञा :- इसका तात्पर्य किसी भी कानून का विनम्रता पूर्वक उल्लंघन करने से है। उदा. - गाँधीजी का दांडी मार्च

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

14. सामूहिक आंदोलन व उपवास :- यह भी शांतिपूर्ण किया जाने वाला आंदोलन है जिसे सामान्यतया भूखहड़ताल कहते हैं। उया – अन्ना अनशन

* निष्कर्ष – सार यही है कि विरोध का सबसे अच्छा तरीका – सत्याग्रह व उसके रूप है।

22. जल प्रदूषक व उनके प्रभाव –

जल प्रदूषक	प्रभाव
① मल-जल (सीवेज)	टाइफाइड, आंत्र शोथ व हैजा जैसी बीमारिया
② पारा (मर्करी)	पारा सर्वाधिक खतरनाक प्रदूषक है जो कि हृदय घात व लीवर से संबंधित बीमारियों का जनक है।
③ सीसा (लेड)	सीसा भी पारे की भाँति ही खतरनाक है जो विषाद तनाव मोतियाबिंद जैसी बीमारियों का कारक है।
④ क्रोमियम	क्रोमियम से आंत्रिक एलर्जी आन्त्र ज्वर व स्ट्रोक जैसी बीमारिया होती है।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

23. 'भारतीय संविधान एकात्मक व संघात्मक तत्वों का अद्भुत संयोग है'

इसे निम्न प्रकार से समझ सकते है —

→* एकात्मक तत्व —

[1] अवशिष्ट शक्तियाँ — संविधान ने अवशिष्ट शक्तियाँ केंद्र सरकार को प्रदान की हैं जो इसकी एकात्मकता का प्रतीक है।

[2] एकल नागरिकता :- भारतीय संविधान के अनुसार भारत के निवासियों को पृथक रूप से राज्यों की नहीं केवल भारतीय संघ की नागरिकता लेनी होती है। (जम्मू-कश्मीर को छोड़कर)

[3] एक संविधान :- भारत राज्यों का संघ है जिसका एक मात्र संविधान है जो सर्वोच्च है। इसके अतिरिक्त राज्यों को पृथक संविधान बनाने की आज्ञा नहीं है। (जम्मू-कश्मीर को छोड़कर)

* संघात्मक तत्व —

[1] शक्तियों का स्पष्ट विभाजन :- भारतीय संविधान में सातवीं अनुसूची में अनुच्छेद 246 के अंतर्गत संघ सूची, राज्य सूची व समवर्ती सूची में शक्तियों का स्पष्ट विभाजन किया गया है तीनों सूचियों में क्रमश:- 97, 66, 47 विषय हैं।

Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

[2] केंद्र में राज्यों का सदन राज्य सभा - संविधान ने अनुच्छेद- 80 में राज्यसभा का प्रावधान किया है जो कि केंद्र में राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है।

*निष्कर्ष - इस प्रकार भारतीय संविधान का स्वरूप संघात्मक है परंतु उसकी आत्मा एकात्मक है।

24. भारतीय संसद निम्न प्रकार से मंत्रिपरिषद पर नियंत्रण रखती है :-

[1] बहस का मंच
(a) प्रश्नकाल
(b) शून्यकाल
(c) आधे घंटे की चर्चा
ध्यान प्रस्ताव
[2] ध्यानाकर्षण प्रस्ताव
[3] काम रोको प्रस्ताव
[4] अविश्वास प्रस्ताव

[1] बहस का मंच - संसद भारत का सबसे बड़ा बहस का मंच है -

(a) प्रश्नकाल - संसद की कार्यवाही का प्रथम 1 घंटा प्रश्नकाल कहलाता है। जिसमें सदस्यों द्वारा मंत्रियों से प्रश्न पूछे जाते हैं तथा मंत्रियों

Pathshala

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

को जबाब देना पड़ता है।

→ प्रश्नों के प्रकार ←

(i) तारांकिक प्रश्न
(ii) अतारांकिक प्रश्न
(iii) समसामयिक प्रश्न

(b) शून्यकाल - प्रश्नकाल के बाद शून्य काल आता है जिसमें मंत्रियों द्वारा प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य नहीं होता।

(c) आधे घंटे की चर्चा - संसद में यह वह समय है जब लोक महत्व के मुद्दों पर चर्चा होती है।

[2] स्थगन प्रस्ताव - संसद मंत्रिपरिषद् के किसी गैर-संवैधानिक कार्य को स्थगित कर सकती है।

[3] काम रोको प्रस्ताव - संसद द्वारा मंत्रिपरिषद् के किसी अनुचित कार्य को रोकने के लिए यह प्रस्ताव लाया जाता है।

[4] अविश्वास प्रस्ताव - यह सबसे महत्वपूर्ण अधिकार है जो सामान्यतया लोकसभा के पास है।

25. 73वें संवैधानिक संशोधन की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं—

→ त्रिस्तरीय शासन प्रणाली
→ प्रत्यक्ष निर्वाचन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

→ राज्य निर्वाचन आयोग व वित्त आयोग
→ लेखा परीक्षण

① त्रिस्तरीय शासन प्रणाली

स्तर	संस्था	प्रतिनिधि
ग्राम	ग्रामपंचायत	सरपंच
खंड/ब्लॉक	पंचायत समिति	प्रधान
जिला	जिलापरिषद	जिला प्रमुख

② प्रत्यक्ष निर्वाचन - पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा निर्वाचित किया जाता है। जिनका कार्यकाल - 5 वर्ष है।

→ इस व्यवस्था में महिलाओं को 1/3 (33% आरक्षण दिया गया है।

③ राज्य निर्वाचन आयोग व वित्त आयोग - इन संस्थाओं के चुनाव कराने

Previous Pathshala

परीक्षार्थी उत्तर

के लिए राज्यस्तरीय **निर्वाचन आयोग** का गठन किया गया है

Note - यह केंद्रीय निर्वाचन आयोग से पूर्णतया भिन्न है।

* इसके अतिरिक्त स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं की वित्तीय समीक्षा हेतु **राज्य वित्त आयोग** का गठन किया गया है।

(5) लेखापरीक्षण - संविधान की 12वीं अनुसूची में 29 विषय जोड़े गए हैं-

(i) कृषि
(ii) पेयजल
(iii) वानिकी आदि

26. भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका को निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

[1] निर्णय प्रक्रिया में भूमिका
[2] चुनाव में प्रत्याशियों का चयन करते समय
[3] मंत्रिपरिषद का गठन करते समय
[4] विकास कार्यों के क्रियान्वयन में-

1. निर्णय प्रक्रिया में भूमिका :- भारत में राजनीतिक स्तर पर लिए जाने वाले निर्णयों में जातिगत दबाव समूह मुख्य रूप से प्रभावित करते हैं।

→ राजनीति में वे प्रत्यक्ष या परोक्ष भागीदारी निभाते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

[2] चुनाव में प्रत्याशियों का चयन करते समय -

राजनीतिक दलों द्वारा अपना उम्मीदवार खड़ा करते समय क्षेत्र विशेष में जाति की बहुलता का ध्यान रखा जाता है।

[3] मंत्रिपरिषद का गठन करते समय -

मंत्रिपरिषद का गठन करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि अपनी वोट बैंक वाली जातियों के प्रत्याशियों को मंत्रिपरिषद में स्थान दिया जाए

[4] विकास कार्यों के क्रियान्वयन में -

जाति विशेष के मंत्री संपूर्ण समाज को अपना न मानकर सिर्फ अपनी जाति व क्षेत्र के विकास पर अधिक ध्यान देते हैं।

*निष्कर्ष - भारत में जाति की राजनीति को उपर्युक्त प्रकार से हर क्षेत्र में देखा जा सकता है।

27. आसियान भारत के लिए निम्न प्रकार से उपयोगी है। —

[1] अर्थव्यवस्था के लिए उपयोगी
[2] ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति
[3] कूटनीतिक संबंध

Previous Pathshala

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

[4] विकास में तेजी लाने में सहायक -

(1.) अर्थव्यवस्था के लिए उपयोगी →

आसियान क्षेत्र विश्व की सातवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है जिसमें 200 बड़ी कंपनियाँ स्थित हैं। भारत अपने देश में आसियान के निवेशकों का निवेश चाहता है।

(2.) ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति →

आसियान में ब्रुनेई व इंडोनेशिया जैसे तेल उत्पादक राष्ट्र हैं जो कि भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं के अधिकतम भाग की पूर्ति करता है।

(3.) कूटनीतिक संबंध →

भारत आसियान राष्ट्रों से कूटनीतिक प्रगाढ़ता स्थापित करना है ताकि वे देश वैश्विक समस्याओं से लड़ने व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उसका समर्थन करें।

(4.) विकास में तेजी लाने में सहायक →

भारत में निवेश व ऊर्जा आपूर्ति के माध्यम से आसियान ने यहाँ विकास में तेजी लाने में सहायता की है।

* निष्कर्ष →

संक्षेप में भारत की आसियान में बढ़ती भूमिका देश के लिए उपयोगी है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

| खण्ड - द |

28. राजनीतिक संस्कृति :- राजनीतिक संस्कृति का तात्पर्य राजनीतिक व्यवस्था व प्रक्रिया के निहित तत्वों से है। दूसरे शब्दों में राजनीति के आधारभूत तत्व ही राजनीतिक संस्कृति है-

* राजनीतिक संस्कृति की विशेषताएँ *

1. समन्वयकारी स्वरूप
2. अमूर्त स्वरूप
3. नैतिकता में विश्वास
4. गतिशीलता
5. राजनीतिक शैली की व्याख्या

(1) समन्वयकारी स्वरूप → राजनीतिक संस्कृति सदैव प्राचीन संस्कृति व आधुनिक संस्कृति में समन्वय स्थापित करती है तथा दोनों को भिन्न भिन्न अवधारणाओं पर नहीं चलने देती।

(2) अमूर्त स्वरूप → राजनीतिक संस्कृति शासन का एक अमूर्त स्वरूप प्रस्तुत करती है। अर्थात राजनीतिक संस्कृति के होते हुए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

शासन कभी सारहीन नहीं हो सकता।

③ नैतिकता में विश्वास :- राजनीतिक संस्कृति व्यक्ति के नैतिक चरित्र के विश्वास में मान्यता रखती है। इसके अनुसार राजनीतिक व्यवस्थाओं के सदस्यों का चरित्र नैतिक होना चाहिए।

* बॉब मारले के अनुसार – " राजनीतिक संस्कृति ऐसी व्यवस्था है जो नैतिक सिद्धांतों का समर्थन करती है।

④ गतिशीलता :- "राजनीतिक संस्कृति अपने सिद्धांतों व आदर्शों में सदैव गतिशील रहती है — राबर्ट डलहोजी

अत: यह स्पष्ट है कि राजनीतिक संस्कृति में परिवर्तनशील अवयव शामिल हैं।

⑤ राजनीतिक शैली की व्याख्या :- राजनीतिक संस्कृति पूर्णतयाः राजनीतिक शैली का वर्णन करने में विश्वास रखती है।

* निष्कर्ष → 'राजनीतिक संस्कृति किसी राजनीतिक व्यवस्था के सदस्यों की उसके प्रति व्यक्तिगत अभिवृत्तियों व उन्मुखताओं की शैली है —

आमण्ड व पावेल'

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

29. Global Warmig
(भूमंडलीय तापन)

→ ग्लोबल वार्मिंग का तात्पर्य मानवीय व प्राकृतिक क्रियाओं द्वारा वैश्विक तापमान में वृद्धि होना है।
→ वैश्विक तापन की व्याख्या ग्रीन हाउस प्रभाव के माध्यम से भी की जा सकती है।

* Green House Effect – ग्रीन हाउस एक कमरा होता है जिसमें ऊष्मा प्रवेश तो कर जाती है परन्तु बाहर नही निकल पाती तथा ग्रीष्म कालीन फसलें व पौधों को भी उसमें उगाया जा सकता है।
→ इसी प्रकार से पृथ्वी का वायुमंडल भी एक कमरे की भांति है जो सूर्य की किरणों के लिए पारदर्शी है परंतु →
CO_2 के बढ़ने के कारण उसकी एक मोटी परत बन गई है जिसके कारण सूर्य की ऊष्मा वापस नहीं जा पाती।
* इस कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है।

* ग्लोबल वार्मिंग के कारण *

1. औद्योगिकरण में वृद्धि
2. प्रगालन व बॉयलिंग उद्योग

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3 परिवहन के साधनों का विस्तार
4 भौतिकवादी संस्कृति
5 रेफ्रिजरेटर, एयरकंडीशनर का अधिक उपयोग।
6 ईंट भट्टियों से निकलता धुंआ
7 जीवाश्म ईंधनों का अधिक प्रयोग
8 हानिकारक गैसों का उत्सर्जन
9 विदेशज फसलों का जबरन उत्पादन
10 रसायनों का बढ़ता प्रयोग
11 सभी प्रकार के प्रदूषण का बढ़ता स्तर-

* दुष्प्रभाव *

1. ओजोन परत में क्षरण
2. खाद्य श्रृंखला में गडबडी आदि।

30.

1971 का भारत-पाक युद्ध

विभाजन के पश्चात् पूर्वी पाकिस्तान (बांगलादेश) में पाकिस्तानी जनरल याह्या खां ने बांगलादेशियों पर अत्याचार करने शुरू कर दिया

→ इन अत्याचारों से पीड़ित होकर शेख मुजीब के नेतृत्व में बांगलादेश में संग्राम शुरू हो गया।

RSER-161/2017

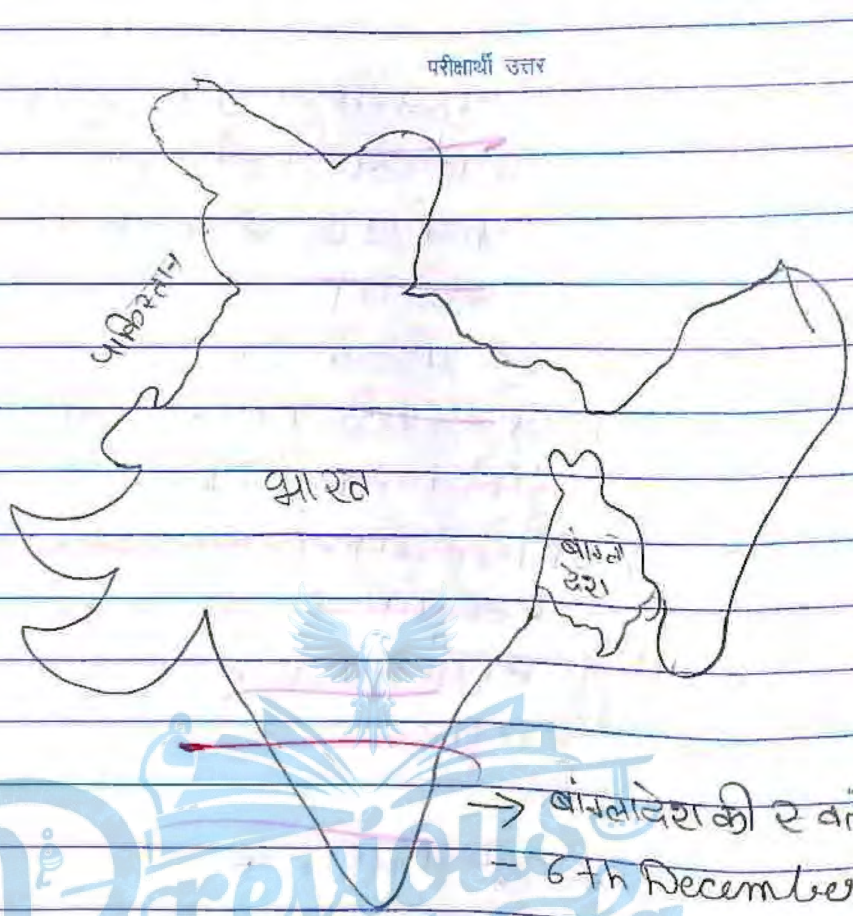

→ बांग्लादेश की स्वतंत्रता
– 6th December, 1971

→ इस संग्राम के परिणामस्वरूप कई बांग्लादेशियों की मृत्यु हो गई।

→ अत्याचार से बचने के लिए रोज 10000 बांग्लादेशी शरणार्थी भारत आने लगे।

* शरणार्थी समस्या के समाधान हेतु भारत ने पाक की नीतियों का विरोध किया। परिणाम स्वरूप 3 दिस, 1971 को पाकिस्तानी सेना ने भारत के 6 हवाई अड्डों पर हमला किया जवाब में भारत ने भी 4 दिस. 1971 को पाकिस्तान के सैन्य शिविरों पर हमला किया।

→ भीषण युद्ध के बाद एक नये

Previous Pathshala

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

देश 'बांगलादेश' का उदय हुआ
बांगलादेश को स्वतंत्रता 6 दिस. 1971 को मिली

* अंतत: 16 Dec, 1971 को जनरल नियाजी
ने भारतीय जनरल जगदीश सिंह अरोरा के समक्ष
आत्म समर्पण कर दिया।

शिमला समझौता

* भीषण युद्ध के बाद पाकिस्तानी जनरल
~~याह्या खां~~ याह्या खां को सत्ता छोड़नी पड़ी
व सत्ता जुल्फिकार अली भुट्टो के हाथ में आ गई
भारत की श्रीमती इंदिरा गांधी व भुट्टो के मध्य
शिमला में वार्ता होना तय रहा व 3 जुलाई 1972
को ऐतिहासिक शिमला समझौता हुआ व दोनों
देश शांति बहाली के लिए मान गए

समाप्त

BSER 161/2017